ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 136-137**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

संक्रामक रोग फैलाना तथा नियंत्रण

डॉ0 बीना पाण्डेय

विभागाध्यक्ष–गृह विज्ञान विभाग, किसान पी0जी0 कॉलेज रकसा रतसर बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-18.11.2024, Revised-26.11.2024, Accepted-02.12.2024 **E-mail : binapandey1980@gmail.com**

सारांशः सामान्यतः संक्रामक रोग का अर्थ उस रोग से लगाया जाता है, जो छूत या संक्रमण के कारण फैलता है। छूत का अर्थ है किसी व्यक्ति का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से छूत के रोग से रोगों के संसर्ग में आना। परोक्ष रूप से वायु, जल, भोजन अथवा अन्य माध्यम से रोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँच जाता है तो ऐसे रोग संक्रमण रोग कहलाते हैं।

कुंजीभूत शब्द– संक्रामक रोग, संक्रमण, प्रत्यक्ष , परोक्ष रूप, संसर्ग, अर्न्तग्रहण, आनुवांशिकता, वैक्टीरिया, प्रोटोजोआ, वायरस

संक्रमण–स्वस्थ शरीर में विभिन्न रोगों के जीवाणुओं द्वारा शरीर में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से पहुंचकर अपनी संख्या में वृद्धि करके कुछ निश्चित अवधि के पश्चात् सम्बन्धित रोग के लक्षण स्वस्थ शरीर में करने की क्रिया को संक्रमण कहते हैं और इस प्रकार उत्पन्न रोग को संक्रामक रोग कहते हैं।

शरीर में संक्रामक रोग निम्न प्रकार फैल सकता है–त्वचा द्वारा, वायु द्वारा, कीटों द्वारा, जानवरों द्वारा, अर्न्तग्रहण द्वारा, आनुवांशिकता द्वारा।

संक्रमण का प्रसार– प्रत्यक्ष,परोक्ष तथा वाहकों द्वारा होता है।

रोग उत्पन्न करने वाले जीवाणु वनस्पति जन्य होते हैं और जन्तु जन्य भी। विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं को विभिन्न नामों से जाना जाता है–वैक्टीरिया प्रोटोजोआ वायरस तथा फफूंदी।

वैक्टीरिया : यह कई प्रकार के होते हैं। जैसे–वेसीलस, कोकस, स्पाइरिलम तथा विब्रिओ।

संक्रमण से बचाव की शरीर की स्वाभाविक व्यवस्था–

i. प्रवेश में अवरोध
ii. संघर्ष
iii. रोग प्रतिरोधक क्षमता
iv. स्वाभाविक रोग क्षमता
v. अर्जित रोग–प्रतिरोधक क्षमता
vi. कृत्रिम रोग निरोधक क्षमता

1. जल द्वारा फैलने वाले रोग–

हैजा– यह जीवाणु द्वारा फैलता है। फैलाने वाले साधन निम्नलिखित हैं– मनुष्य का आवागमन, नदियां, रोगाणु वाहक मनुष्य, दूध तथा पेय जल से फैलता है।

पेचिश–यह दो प्रकार की होती है– ऐमीविक, वैसीलरी

मोतीझरा– यह रोग साल्मोनेला टाइफी नामक जीवाणु से उत्पन्न होता है। यह रोगाणु रोग के मूलभूत व थूक में निहित रहते हैं अतः इनका उचित निःसंक्रमण परम आवश्यक है। यह तीन प्रकार के होते हैं–पैराटाइफाइड–ए, पैराटाइफाइड–बी, एवं टाइफाइड। इसमें मूत्र बंद हो जाता है। पेट फूल जाता है। तीव्र ज्वार में सन्निपात हो जाना, रूधिर स्राव होना।

2. **वायु द्वारा फैलने वाले रोग**–इनको दो भागों में विभक्त किया जा सकता हैः जीवाणु द्वारा फैलने वाला रोग एवं विषाणु द्वारा फैलने वाला रोग।

क्षय रोग– यह रोग एक विशेष प्रकार के जीवाणु जीनस माइक्रो–वैक्ट्रीयम् द्वारा होता है। इसकी सर्वप्रथम खोज सन् 1882 में राबर्ट काच ने की थी। यह जीवाणु वैसीलस आकार का होता है अतः इसे जीवाणु कहते हैं। मेरूदण्ड के क्षय रोग को कैरीज, मस्तिष्क के क्षय रोग को मैनेन्जाइटिस तथा चर्म के क्षय रोग को ल्यूपस कहते हैं। फेफड़ों में होने वाले क्षय रोग को फुफ्फुसीय क्षय रोग कहते हैं। क्षय रोग की तीन स्थितियां होती हैं–प्रारम्भिक या सामान्य, मध्य या विकसित स्थिति एवं अति विकासावस्था । यह रोग प्रायः रोगी के छींकने, खांसने जम्हाई लेने अथवा जोर से बोलने पर वायु के माध्यम से संक्रमित होता है। इसको रोकने के लिए वी0सी0जी0 वैक्सीन व इंजेक्शन देना चाहिए।

(अ) फुफ्फुसीय क्षय रोग– फेफड़ों का क्षय रोग ही संसार में मुख्य रूप से फैला हुआ है।

(ब) डिप्थीरिया– यह रोग जीवाणु कानी वैक्ट्रीयम डिप्थीरिएई द्वारा होता है। यह तेजी से फैलने वाला गले का जीवाणु जनक तीव्र संक्रामक रोग है।

(स) कुकर खांसी– यह रोग जीवाणु वैसीलस पर्टयूसिस द्वारा होता है। यह रोग मुख्य रूप से छोटे बच्चों में पाया जाता है।

(द) निमोनिया– इस रोग के लक्षण बिल्कुल इन्फ्लुएन्जा के रोग से मिलते–जुलते हैं। यह अचानक होता है और तीव्र गति से वृद्धि करता है। इसका समय 6 से 30 घण्टा होता है।

1. विषाणु द्वारा फैलने वाले रोग– 1.चेचक 2. खसरा 3. कर्णफेर 4. जुकाम, 5. इन्फ्लुएन्जा 6. पोलियो 7. एड्स।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

चेचक– चेचक कभी अतिभयानक रोग के रूप में जाना जाता था। लेकिन W.H.O और भारत सरकार ने तीसरी योजना में इस रोग के उन्मूलन के लिए विशेष प्रयास किये थे। इब दोनों के प्रयास से इस रोग को उत्पन्न करने वाले जीवाणु को पूरे विश्व में उन्मूलन नष्ट करने में सफलता पाई है।

छोटी चेचक– यह भी छोटे बच्चों को होता है तथा वायु द्वारा प्रसारित होता है। इस रोग के विषाणु नाक और गले के स्राव में होते हैं। इसके अतिरिक्त शरीर पर होने वाले दाने के तरल पदार्थ में भी होते हैं । और वायु में उड़कर रोग फैलाते हैं। अतः दोनों के पापड़ी को सम्भव हो सके तो एकत्र करके जला देना चाहिए।

खसरा– खसरा भी एक संक्रामक रोग है जो कि बच्चों में होता है। गले व नाक के स्रावों और त्वचा पर निकली पित्ति के दाने के सूखे छिलके में रोगाणु पाये जाते हैं। थूक आदि के बिन्दु श्वास बिन्दु श्वास क्रिया के अन्तर्गत वायु के माध्यम से स्वस्थ व्यक्तियों को रोगी बनाते हैं। इस रोग का टीका नहीं लगता, परन्तु एक बार रोग से पीड़ित हो जाने से व्यक्ति इसके प्रति रोग क्षमता अर्जित कर लेता है तथा फिर से कभी उसे यह रोग नहीं होता है।

कर्णफेर–इसे गलसूआ भी कहते हैं। यह भयानक रोग नहीं है। इसमें कान के आगे तथा नीचे गिल्टीओं में सूजन आ जाती है। यह रोग बच्चों तथा बड़ों दोनों को हो सकता है। यह रोग शीतकाल में अधिक होता है । इसमें रोगी को भोजन करने में पीड़ा होती है। इसके जीवाणु श्वास व लार में रहते हैं। यह थुक द्वारा स्वस्थ व्यक्ति में पहुंच जाता है। इसमें तीव्र ज्वर रहता है। इसमें रोगी के सूजे भाग पर आयोडेक्स लगनी चाहिए। यदि दर्द हो तो गरम पानी से धोना चाहिए।

एड्स– इसका पूरा नाम एक्वायरड इम्यूनिटी डिफिसियन्सी सिन्ड्रोम है। इसका ज्ञान अभी कुछ समय पूर्व ही हुआ है। यह एक अति भयंकर घातक रोग है। यह रोग एक विशेष प्रकार का (H.T.L.V) विषाणु द्वारा होता है। यह विषाणु श्वेत रूधिर कोशिकाओं को नष्ट कर डालते हैं जिससे उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता नष्ट हो जाती है और वह विभिन्न रोगों का शिकार हो जाता है।

2. जीव जन्तुओं द्वारा संवाहित रोग– कीट तथा जन्तुओं जन्य रोगों के प्रमुख वाहक मच्छर एनोफिलीज–मलेरिया, पिस्सू, प्लेग और पागल कुत्ते रेवीज हैं।

मलेरिया– इसे जूड़ी ज्वर कहते हैं। भारत के कुछ भाग तो इससे बुरी तरह प्रभावित रहते हैं जैसे बंगाल की दक्षिणी भाग, असम तथा अन्य तराई क्षेत्र तो इसका घर ही हैं। भारत में यह रोग सितम्बर माह में फैलता है तथा अक्टूबर से दिसम्बर तक इसका प्रकोप अति तीव्र होता है। यह पराश्रयी जीवाणु इस रोग को उत्पन्न करता है। मनुष्य शरीर में इस रोगाणु का वाहन करने वाला एनोफिलीज मादा मच्छर है।

प्लेग– यह बहुत ही भयंकर एक संक्रामक रोग है। इसे काली मृत्यु के नाम से पुकारा जाता है। यह रोग एक वेसीलस जिसे पास्चुरेला पैस्ट्स कहते है, उत्पन्न होता था। यह रोग तीन प्रकार से होता है–ग्रन्थीय प्लेग, न्यूमोनिक प्लेग तथा प्राथमिक न्यूमोनिक प्लेग। इसका जीवाणु शरीर में दो प्रकार से प्रविष्ट होता है। चर्म छेदन, स्वास द्वारा। प्लेग तथा चूहा परस्पर सम्बन्धित है। चूहा–यह दो प्रकार के चूहे हैं जो रोग फैलाते हैं–Mas Decuminus, Mas Ratters

पिस्सू– यह पंखहीन मक्खी होती है जो केवल फुदक सकती है लेकिन उड़ नहीं सकती।

रेबीज या हाइड्रोफोबिया–रेबीज वायरस रोगाणु द्वारा यह रोग होता है जो कि तन्त्रिका तंत्र को प्रभावित करता है। यह रोग कुत्तों, बिल्लियों तथा गीदड़ों को भी हो जाता है। मुख्य रूप से यह रोग पागल कुत्तों को काटने से होता है।

इस रोग का जीवाणु प्रोटोजोआ श्रेणी का जीव है जो न्यूरोराइसिटीज हाइड्रोफोबिया कहलाता है। यदि किसी स्वस्थ मनुष्य की त्वचा पर कोई खरोचने अथवा काटे का स्थान है और उस स्थान पर रोगी पशु जीभ लगा दे तो रोग के जीवाणु त्वचा के उस छिद्र से शरीर में प्रविष्ट हो जाता है। घाव पर उपयुक्त प्राथमिक उपचार के पश्चात् एक विशेष प्रकार के रेबीज निरोधक टीके लगवाने का प्रबंध करना चाहिए।

*****